वैयक्तिक विभेद

इस संसार में प्रत्येक प्राणी दूसरे से भिन्न प्रकृति का है, और इस प्रकार की परस्पर भिन्नता का होना प्रकृति की स्वाभाविक देन है, प्रत्येक व्यक्ति की संरचना उसके शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक गुणो जैसे रूप, रंग, शारीरिक गठन, बुद्धि, रूचि योग्यता इत्यादि के अनुपम संयोजन से होती है, साथ ही साथ प्रत्येक व्यक्ति के वातावरण से प्राप्त अनुभव भी भिन्न होते है, ये सभी अनुभव उसके व्यक्तिव के प्रमुख भाग बनते जाते है, इस प्रकार वैयक्तिक विभेद से अभिप्राय है एक व्यक्ति का शारीरिक गुणों जैसे रंग, रूप, लम्बाई, भार, शारीरिक गठन, इत्यादि तथा मनोवैज्ञानिक गुणों जैसे बुद्धि रूचि, योग्यता अभिवृत्ति, व्यक्तित्व इत्यादि में दूसरे व्यक्ति से भिन्न होना। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की अपनी कुछ विशिष्ट विशेषतायें होती है जो उसे दूसरे से भिन्न करती है। वैयक्तिक विभेदों की बालको के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालको की बुद्धि, रूचि, योग्यता इत्यादि के अनुरूप विकास के अवसर मिलने पर ही वे अपनी योग्यताओं का सर्वोत्तम विकास कर सकते है।

वैयक्तिक विभेद मुख्य रूप से शारीरिक, मानसिक सांवेगिक तथा समाजिक क्षेत्रों में दिखाई देते है। शारीरिक क्षेत्र के अन्तर्गत लम्बाई, वजन, ज्ञानेन्द्रियां, कर्मोन्द्रियां, गतिवाही क्षमता इत्यादि आते है। व्यक्ति की शारिरीक रचना का प्रभाव उसके व्यवहार पर पड़ता हे। शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तथा सुदृढ़ व्यक्ति कमजोर व्यक्ति की तुलना में वातावरण के साथ अच्छा समायोजन कर सकता है, इससे उसका सीखना भी प्रभावित होता है। शारीरिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्ति अधिक समय

तथा अवधान केन्द्रित कर सकता है। वैयक्तिक विभेद शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में हो सकता है, शारीरिक क्षेत्र के अन्तर्गत रंग, रूप, शरीरिक गठन, ऊँचाई, भार, लिंगभेद जैसी शारीरिक विशेषतायें आती है, जैसे कुछ व्यक्ति अधिक लम्बे हो सकते है, तथा कुछ ठिगने, कुछ मोटे हो सकते है, तो कुछ पतले। किसी की ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां ठीक प्रकार से कार्य कर सकती है तो किसी की दोषयुक्त होती है। इसी प्रकार व्यक्तियों की गतिवाही क्षमता भी भिन्न–भिन्न होती है। ऊंगलियों से किये जाने वाले कार्यो में जैसे सिलाई–बुनाई में समान्यतः महिलायें पुरूषों की अपेक्षा तेजी से कार्य करती है, जब कि हाथों से किये जाने वाले भारी कार्यो जैसे फावड़ा चालना, पत्थर काटना आदि में पुरूष स्त्रियों की अपेक्षा शीघ्रता से कार्य करते है। गतिवाही क्षमता को आयु एवं परिपक्वता भी प्रभावित करती है। छोटे बालकों की तुलना में वयस्क कार्यो को शीघ्र गति से कर सकते है तथा वृद्ध की अपेक्षा युवाओं की कार्य करने की गति अधिक होती है। व्यक्ति की शारीरिक क्षमता का प्रभाव उसके व्यवहार पर पड़ता है। शारीरिक गुणो की तरह ही व्यक्तियों में मानसिक गुण जैसे बुद्धि, रूचि, सृजनशीलता, स्मरणशक्ति, अभिक्षमता, विशिष्ट योग्यता इत्यादि भी भिन्न–भिन्न पाये जाते है। कुछ व्यक्ति प्रतिभाशाली होते है, जबकि कुछ मूर्ख। किसी को शीघ्रता से याद होता है, तो किसी की याददाशत कमजोर होती है किसी में यान्त्रिक अभिक्षमतायें होती है तो किसी में साहित्यिक अभिक्षमतायें होती है और किसी में कलात्मक अभिक्षमतायें होती है। छात्रों को व्यावसायिक निर्देशन मूलरूप से उनकी अभिक्षमताओं के आधार पर ही दिया जाता है।

इसी प्रकार व्यक्ति की अभिरूचियॉ भी भिन्न होती है अभिरूचियॉ दो प्रकार की होती है जन्मजात तथा अर्जित। जन्मजात रूचि खेल के प्रति हो सकती है किन्तु विशिष्ट प्रकार के खेल जैसे क्रिकेट या बैड़मिटन आदि के प्रति रूचि अर्जित की जाती है।

इसी प्रकार कुछ व्यक्ति संवेगात्मक रूप से स्थिर होते है जबकि कुछ चिन्ताग्रस्त, क्रोधी, भीरू, अवसादग्रस्त होते है, कुछ अन्तर्मुखी होते है तो किसी के व्यक्तित्व बहिमुखी प्रकार के होते है। कुछ उदार एवं लचीले व्यक्तित्व वाले होते है तो कुछ कठोर एवं अडियल स्वभाव के होते है। व्यक्तियों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक भिन्नता भी पायी जाती है। समाज के आदर्श, मूल्य, विश्वास, परंपराये, धर्म, रीतियां इत्यादि व्यक्तियों के व्यवहार को प्रमुख रूप से प्रभावित करती है।

व्यक्तिगत विभिन्नता को कई कारक प्रभावित करते है वंशानुक्रम उनमें प्रमुख है। माता–पिता से प्राप्त होने वाले गुणसूत्रों के असंख्य भिन्न समुच्चय होने के कारण एक ही माता–पिता की संतानो में भी परस्पर भिन्नता पायी जाती है। यहॉ तक कि दो जुड़वा बच्चों में भी शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक तथा सामाजिक भिन्नता पायी जाती है।

व्यक्तिगत भिन्नता पर वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है वातावरण से तात्पर्य है व्यक्ति के चारों ओर की परिस्थितियाँ, जिनमें रहकर तथा जिनसे अन्तः क्रिया करते हुये व्यक्ति सीखता है और ये सीखे हुये अनुभव उसके व्यक्तित्व को प्रमुख रूप से प्रभावित करते है। शारीरिक व मानसिक गुण वंशानुक्रम से प्राप्त होते है, किन्तु उनका विकास वातावरणीय कारकों से प्रभावित होता है जैसे एक शिशु को

स्वरयन्त्र वंशानुक्रम से प्राप्त होता है, किन्तु भाषा वह वही सीखता है जो उसके सामाजिक पर्यावरण में बोली जाती है। इसी प्रकार से रूचियों, अभिवृत्तियों, आदर्शो एवं मूल्यों आदि का विकास वातावरण पर निर्भर करता है वातावरण कई प्रकार के हो सकते है जैसे–भौगोलिक वातावरण, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, संस्कृतिक वातावरण, शैक्षिक वातावरण आदि। व्यक्ति जिस प्रकार के वातावरण में रहता है उसी के अनुरूप उसका शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा चारित्रिक विकास होता है, शिक्षित तथा अशिक्षित परिवारों के बालको के रहन–सहन, आचार–विचार में अन्तर पाया जाता है। इसी प्रकार ग्रामीण व शहरी बालको के व्यवहारों तथा स्वभावों में अन्तर दिखाई देता है।

परिपक्वता भी वैयक्तिक विभेद का कारण होती है। परिपक्वता का संबंध प्रायः आयु से होता है भिन्न–भिन्न आयु के बच्चों में शारीरिक, मानसिक तथा सांवेगिक परिपक्वता में भारी अन्तर होता है। और इससे व्यक्ति का व्यवहार प्रभावित होता है, आयु बढ़ने के साथ–साथ परिपक्वता में वृद्धि होती है। मानसिक परिपक्वता में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों में खेल और जिज्ञासा की प्रवृत्ति अधिक होती है तथा व्यवहार में चंचलता होती है, जबकि प्रौढ़ो में अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेष्ट रहने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

इसी प्रकार सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक पृष्टभूमि की भिन्नता के कारण भी वैयक्तिक विभिन्नतायें पायी जाती है। जाति–प्रजाति तथा लिंग भेद भी वैयक्तिक भिन्नता के कारण होते है। शारीरिक रंग, रूप मानसिक चिन्तन व सामाजिक सोच में प्रायः जाति–प्रजाति का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार

बालक–बालिकाओं में शारीरिक गठन, स्वभाव व व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणो में भिन्नता पायी जाती है। बालक प्रायः साहसी व कठोर होते है जबकि बालिकायें प्रायः कोमल, दयालु व लज्जाशील होती है। शारीरिक स्वास्थ्य के अन्तर के कारण भी व्यक्तियों में अन्तर दिखायी देता है। शारीरिक व व मानसिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्ति उत्साही, सीखने के लिये तत्पर तथा क्रियाशील होते है जबकि अस्वस्थ्य व्यक्ति चिड़चिड़ा अवसादग्रस्त, शीघ्र थकने वाला व निरूत्साही दिखाई दे सकता है।

बालको के वैयाक्तिक विभेद का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा बाल केन्द्रित है। शिक्षा का उद्देश्य है। सभी बालको का सर्वांगीण विकास करना इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये लगभग एक ही पाठ्यचर्या को शिक्षक अपने छात्रों तक इस रणनीति से प्रेषित कर सकें कि सभी छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा उनकी क्षमताओं के अनुसार उनमें योग्यतायें विकसित हो सकें। इसलिये शिक्षा के उद्देश्य के निर्धारण एवं उनकी प्राप्ति के लिये वैयक्तिक विभेद का ज्ञान होना अति आवश्यक है। कक्षा के आकार को सुनिश्चित करने के लिए भी वैयक्तिक विभेदो का ज्ञान आवश्यक है। छात्रो की सामर्थ्य, रूचि व आवश्यकताओं के अनुसार उनकी शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित करने के लिये उनकी व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर ही उन्हें सजातीय वर्ग में विभाजित किया जा सकता है छात्रों के वर्ग बनाते समय शारीरिक व मानसिक व सांवेगिक परिपक्वता का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। इसी प्रकार सभी बालकों में एक समान ही पाठ्यक्रम का अध्ययन करने का सामर्थ्य नहीं रहता है। अतः छात्रों की अवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम में विविधता व लचीलापन लाया जा सकता है।

कक्षा में भिन्न वैयक्तिक विभेदों वाले छात्र होते है अतः सभी के लिये एक ही शिक्षण विधि का प्रयोग करना उचित नहीं होता है अतः वैयक्तिक भिन्नताओं का ध्यान में रखकर भिन्न–भिन्न शैक्षिक विधियों जैसे डाल्टन विधि, प्रोजेक्ट विधि, व्यक्तिगत शिक्षण, कक्षा रहित विद्यालय शिक्षण, उपचारात्मक शिक्षण आदि का प्रयोग किया जा सकता है। वैयक्तिक विभिन्नताओं के कारण ही इन विधियों का प्रतिपादन किया गया है। सिखाये हुये ज्ञान का अभ्यास कराने पर वह ज्ञान स्थायी होता जाता है, अतः कक्षा–कार्य एवं गृहकार्य द्वारा छात्रों को अभ्यास के अवसर दिये जाते है, किन्तु गृह कार्य, कक्षा–कार्य, प्रोजेक्ट, समनुदेशन आदि देते समय व्यक्तिगत विभिन्नताओ का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है कार्य का कठिनाई स्तर तथा कार्य की मात्रा निर्धारित करते समय छात्र की मानसिक क्षमता परिपक्वता, संवेगात्मक स्तर तथा विशिष्ट योगयता आदि का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है।

वैयक्तिक विभेदों को जानने के लिये अवलोकन परीक्षण, मापनी, व्यक्ति इतिहास विधि तथा संचयी अभिलेख जैसी प्रमुख विधियों का प्रयोग किया जाता है। अवलोकन या निरीक्षण व्यक्तियों के गुणो को मापने की अत्यन्त प्राचीन तथा सर्वसुलभ विधि है इसमें व्यक्तियों के व्यवहार को देखकर उसके गुणों या विशेषताओं को जाना जाता है। अनपढ़, मानसिक मंद, विकलांगो, छोटे बच्चों तथा अन्य भाषा–भाषी व्यक्तियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं का मापन करने के लिये अवलोकन एक उपयोगी विधि है। अवलोकन को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिये नियंत्रित विधि तथा अवलोकन के तकनीकी यंत्रों जैसे कैमरा, वीडियोग्राफी इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है।

आधुनिक समय में व्यक्तिगत विभेदों को जानने के लिये परीक्षणों तथा माननियों का बहुतायत से उपयोग किया जाता है। जैसे बुद्धि का मापन करने हेतु बुद्धि परीक्षण, व्यक्तिव का मापन करने हेतु व्यक्तित्व परीक्षण, अभिरूचि, अभिवृत्ति इत्यादि गुणों का मापन करने हेतु अभिरूचि व अभिवृत्ति मापनी/परीक्षणों का उपयोग किया जाता है।

व्यक्ति इतिहास विधि तथा संचयी आलेख द्वारा व्यक्ति की विशेाताओं/गुणो को जाना जाता है। ये व्यक्ति के संबंध में महत्वपूर्ण सूचनाये प्रदान करते है। विशेषप्रकार शैक्षिक दृष्टि से विशिष्ट छात्रों को उनकी आवश्यकताओं व क्षमताओं के अनुसार शिक्षा देना सुगम हो जाता है।

इस प्रकार कक्षागत वैयक्तिक विभिन्नताओ को जानकर तथा उसी के अनुरूप शैक्षिक विधान संरचित कर शैक्षिक उद्देश्यों की प्रप्ति की जा सकती है जैसे उद्देश्य निर्धारित करना, पाठ्यचर्या संगठन, शिक्षण विधियों, संप्रेषण शैलियों तथा दृश्य–श्रृव्य सहायक सामग्रियों का चयन, कक्षा कार्य व गृह कार्य को देना इत्यादि में विशिष्ट रणनीति बनाकर छात्रों का उनकी क्षमताओं के अनुरूप उच्चतम विकास किया जा सकता है।